दिव्य सूक्त

भगवान का नाम भगवान के जैसा ही रसमय है।
यह गॉड थैरपी है। यह परमोत्कृष्ट थैरपी है।

~ बाबा मुक्तानन्द

नामसंकीर्तन में रस निहित है,
जो भक्तिरस है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

भगवान का नाम रस का, मधुरता का, अमृत का भण्डार है।
भगवान का नाम अत्यन्त मधुर और अत्यन्त अमृतमय है।
तुम्हें इससे अधिक मधुर कुछ भी नहीं मिल सकता।
जो भी नाम का पान करता है, वह भगवान के जैसा ही बन जाता है।
यह है नाम की महिमा।

~ बाबा मुक्तानन्द

दिव्य नाम अदृश्य को दृश्य कर देता है,
और नामसंकीर्तन करने से
दैवी रस की अनुभूति होती है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

वस्तुतः, ईश्वर ही रस हैं।

~ तैत्तिरीयोपनिषद्, २.७.१

संस्कृत भाषा में 'दिव्य' का अर्थ है दैवी या ईश्वरीय, और 'सूक्त' का अर्थ है, वह कथन जो सर्वोच्च सत्य को उजागर करता है। दिव्य सूक्त : ईश्वर के विषय में सिखावनियाँ।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।